डॉ॰शिवाजी विष्णु निकम
एम्॰ए॰पीएच्॰डी॰
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक,
हिन्दी विभाग,
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा॰
(महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ॰शिवाजी विष्णू निकम, स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक, हिन्दी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा॰शहाजी शामराव जाधव ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्॰फिल्॰(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध "वीरेन्द्रकुमार जैन की काव्य-साधना" मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं प्रा॰शहाजी शामराव जाधव के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

सातारा
दिनांक : 28/12/95.

हस्ताक्षर
डॉ॰शिवाजी विष्णु निकम
निर्देशक

अ नु शं सा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्री जाधव शहाजी शामराव का एम्·फिल्· (हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध "वीरेन्द्रकुमार जैन की काव्य-साधना" परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

28/12/1995

डॉ· गजानन शंकर सुर्वे
हिन्दी विभागाध्यक्ष
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

L. B. S. College
Satara

प्राचार्य पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

परीक्षार्थ अग्रेषित —

शिवाजी विश्वविद्यालय
हिन्दी विभाग
कोल्हापुर

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

प्र स्था प न

"वीरेन्द्रकुमार जैन की काव्य-साधना"

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्· के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा

दिनांक 28/12/95

हस्ताक्षर

प्रा·शहाजी शामराव जाधव

अनुसंधाता

भू मि का

सन् 1943 ई॰ में अज्ञेय के संपादन में तार सप्तक का प्रकाशन हुआ और उन्होंने तार सप्तक के माध्यम से आधुनिक कविता के क्षेत्र में प्रयोगवादी विचारधारा को जन्म देकर एक नये युग का सूत्रपात किया, जो आगे चलकर "नयी कविता" के रूप में परिणत हो गया। नयी कविता का प्रारंभ भी वैसे अज्ञेय द्वारा संपादित दूसरे सप्तक तथा तीसरे सप्तक की कविताओं से विशेष रूप से माना जाता है क्योंकि अज्ञेय ने ही सर्वप्रथम दूसरे सप्तक में नयी कविता के लिए "नयी कविता" शब्द का प्रयोग किया था।

नई कविता आज की समस्त विसंगतियों और विड़बनाओं को युगानुरूप अभिव्यक्त करने में बेहतर साबित हुयी है। उसने समकालीन जीवन-यथार्थ को बड़ी गंभीरता और दायित्वपूर्ण तरीके से उकेरने की स्थिति बनाई। फलतः नये कवियों ने जिंदगी की असलियत से सीधा संवाद स्थापित किया।

नई कविता अपनी बदलती हुई मुद्रा की परख के लिए आलोचना के नये तेवर और प्रतिमानों की माँग करती है क्योंकि अभी भी कुछ आलोचकों का रूख नयी कविता के प्रति अवज्ञा और विरोध का है। उनकी मानसिकता रोटी, हड़ताल और राजनीति को कविता का विषय मानने से इन्कार करती रही। युग की नब्ज की पकड़ रचनाकार के लिए अनिवार्य है।

आ॰नंददुलारे वाजपेयी को भी कहना पड़ा है कि नयी कविता में समरसता आ रही है, जो एक शुभलक्षण है। नयी कविता आज की जिंदगी की कड़वी, जटिल एवं भयावह सच्चाइयों को उकरने एवं समकालीन यथार्थ के उद्‌घाटन का प्रामाणिक दस्तावेज है। उसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति में इतना गहरा तालमेल रहा है कि जीवन के कठिण्य एवं वैविध्य को सहज संप्रेष्य बना दिया है।

उस दिशा में नयी कविता के नये कवि वीरेन्द्रकुमार जैन का प्रयोजन नयी कविता की संपूर्णता को पहचानने की ठोस एवं कारगर पहल है तथा उसके सही समीक्षात्मक विवेचना देने की शक्ल में गूंगे के मुंह में जुबान डालने की लगातार कोशिश है। यह माने की इंच तो होती है कि नयी कविता के प्रवाह में कुछ ऐसी रंगत जरूर है जो अलग से पहचान में आ रही है, यह पहले भी थी, पर तब उसकी ओर ध्यान न था। आज की पीढ़ी उसे रेखांकित करके बार-बार दिखा रही है। यह दिखावा ही उसे पनपने नहीं दे रहा है। रही अलग से पहचान वाली रंगत की बात वह नयी कविता से ही फूटी है।

नयी कविता बहु आयामी है। उसके सभी आयाम खुल गए हैं। अभी ऐसा दावा करना थोडी जल्दबाजी लगती है क्योंकि हमने आजतक नयी कविता की बात तो की है लेकिन नयी कविता के एक-एक रचनाकार को लेकर बात करना शेष है। वीरेन्द्रकुनार जैसे शक्तिवान कवि के सृजन का मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। उनका नयी कविता में मूल्यबोध कहाँ है ? इसका विश्लेषण विस्तृत भी नहीं हुआ है, अतः वीरेन्द्र की कविताओं को मैंने अपने ढंग से सोचा है। आप इसे पसन्द करेंगे। [प्रत्येक क्रांतिदर्शी कवि अपने समय का संशवाहक होता है। कवि का काम समकालीनता को समर्थ आयाम देने के साथ भविष्य को भी एवं नये रूप में परिवर्तित करने का है। वर्तमान मूल्यों में परिवर्तित की नई दिशा निर्मित करने वाले कवि भी सही अर्थों में आधुनिक साहित्य को गत्यात्मक बनाने के लिए प्रतिश्रुत होता है।

वीरेन्द्रकुमारजी ने आधुनिक हिन्दी कविता को एक नया संदर्भ सहजभाषा तथा रुढ़ियों से विद्रोह की चेतना प्रदान की है। वीरेन्द्र की कविता ने हिन्दी काव्य को बौध्दिक और सामाजिक चेतना प्रदान की है और कविता को जनसमाज के निकट लाने का प्रयत्न किया है।]

मैंने वीरेन्द्र की काव्य रचनाओं को तटस्थ दृष्टि में देखने की चेष्टा की है, परंतु उनकी नवीन उद्भावनाओं और अभिनवभाव-दिशाओं का निरूपण करने में सहानुभूति और प्रशंसा में कभी कमी नहीं की है।

जब प्रयोगवाद और नयी कविता दोनों किसी-न-किसी बिंदु पर एक हो गए, युवा कवियों ने एये नामों का मेला ही लगा दिया। उसमें वीरेन्द्रकुमार के साहित्य का समग्र रूप से कोई समीक्षात्मक आकलन अभी तक नहीं हुआ है। इसीलिए प्रस्तुत विषय को मैंने अपने अध्ययन का क्षेत्र चुना है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध सात अध्यायों में विभाजित है जिसमें वीरेन्द्रकुमार के समग्र साहित्य के साथ व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परामर्श है। प्रथम अध्याय में वीरेन्द्रकुमार के जीवनवृत्त के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। दूसरे अध्याय में कवि का संवेदनशील रूप दिखाई देता है। तीसरे अध्याय में कवि का रोमांटिक रूप पाया जाता है। वचतुर्थ अध्याय में वीरेन्द्रजी के कल्पना का विस्तार से परिचय मिलता है। पंचम अध्याय में वीरेन्द्रकुमार का प्रकृति वर्णन अधिक सफलतम रूप निखर आता है। षष्ठम् अध्याय में उनकी भाषा शैली एवं काव्य-शिल्प का रूप दिखाई देता है। लघुआकारवाले अंतिम अध्याय में नयी कविता में वीरेन्द्रजी की संभाव्नाओं पर विचार किया गया है।

मेरे निर्देशक, छत्रपति शिवाजी के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के डॉ॰शिवाजीराव निकमजी की शोध-कार्य के समुचित एवं संतुलित संशोधन एवं निर्देशन में उनकी लगन उतनी ही महत्वपूर्ण रही है। पग-पग पर मुझे मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन मिलता रहा है। उनके विद्वतापूर्ण निर्देशन में यह लघु-शोध-प्रबंध लिखा गया है। उन्हीं की प्रेरणा, शुभाशंसा का प्रतिफल यह शोध-कार्य है।

इस शोध-संकल्प की पूर्ति में जिनसे मुझे प्रोत्साहन मिला उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना मैं अपना पूनित कर्तव्य मानता हूँ। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ॰जी॰एस॰सुर्वेजी तथा प्रा॰जयवंत जाधव के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे निर्देशन पुस्तकीय सहायता-सामग्री संवर्धन में सहयोग दिया है। उनकी ज्ञान-गरिमा ने मुझे यह शोध-कार्य संपन्न करने की प्रेरणा दी।

मेरे परमपूज्य पिता श्री॰शामराव विठ्ठल जाधव तथा मेरी पत्नी सीमा जाधव इनका प्रोत्साहन मेरा प्रबंध पूरा करने के लिए प्रेरणादायी रहा है।

उनकी अपार इच्छा के कारण मैं मेरा यह कार्य सफल कर सका हूँ।

मेरे इस लघु-शोध-प्रबंध को पूरा करने में मेरे आदरणीय गुरूवर्य छत्रपति शिवाजी कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष एस·डी·आढावजी तथा पद्मभूषण वसंतराव दादा पाटील कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष एस·के·जाधवजी के सहयोग का मेरे लिए बहुत अधिक मूल्य है जिसे मैं शब्दों में नहीं व्यक्त कर सकता, यह भी तय है कि इस सहयोग के बिना यह कार्य पूरा नहीं हो सकता था।

छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा के ग्रन्थपाल तथा उनके सहयोगियों का शुक्रिया अदा करना मैं अपना कर्तव्य मानता हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध में मेरे मित्रों ने इसमें सहयोग दिया है। पग-पग पर प्रोत्साहित किया। प्रेरणा प्रदान की वह है प्रा·नलवडे पी·आर, प्रा·बर्गे व्ही·व्ही·, प्रा·माने यू·आर·, प्रा·राजे सी·एस·, प्रा·मागाडे, प्रा·कांबळे, प्रा·पवार जे·के·, प्रा·रूवीकर आदि। उनके आत्मीयता पूर्ण योगदान के प्रति हृदय के गहनतल से आभार प्रकट करना मात्र औपचारिकता होगी।

जिनके प्रति मेरी संपूर्ण श्रद्धा विनयागत है, उनके साथ ही उन सभी नये कवियों, लेखकों की पुस्तक रचनाओं का आभारी हूँ। जिनसे मैंने किसी-न-किसी रूप में सामग्री ग्रहण की है।

इस लघु-शोध-प्रबंध का सुरूचिपूर्ण और अत्यंत तत्परता से टंकन-लेखन करने वाले "रिलॅक्स सायक्नोस्टायलिंग, सातारा" के श्री·मुकुन्द ढवले, सुशीलकुमार कांबले तथा राजू कुलकर्णी भी धन्यवाद के पात्र हैं।